पपीता की खेती

प्रजातियाँ

❖ पूसा डेलीसस 1-15	❖ पूसा मैजिस्टी 22-3
❖ पूसा जायंट 1-45-वी	❖ पूसा ड्वार्फ 1-45-डी
❖ पूसा नन्हा	❖ सी०ओ०-1
❖ सी०ओ०-2	❖ सी०ओ०-3
❖ सी०ओ०-4	❖ कुर्ग हनी
❖ हनीडीयू	

खेत की तैयारी

- पपीता सभी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है
- जीवांश युक्त एवं उचित जल निकास वाली बलुई दोमट एवम दोमट मिट्टी उत्तम होती है

बीज की मात्रा एवं बुवाई

- एक हेक्टयर की रोपाई के लिए 400 ग्राम बीज की आवश्यकता
- 3 मीटर लम्बी, 1 मीटर चौड़ी तथा 10-15 सेमी० ऊँची क्यारी में या गमले या पालीथीन बैग में पौध तैयार करते है

- बीज क़ी बुवाई से पहले क्यारी को 10% फार्मेलड़ीहाईड के घोल का छिडकाव करके उपचारित करे
- बीज 1 सेमी० गहरे तथा 10 सेमी० क़ी दूरी पर बोते है
- 15-25 सेमी० ऊँचे पौध की रोपाई करे

पौधों का रोपण

रोपाई का समय

- जून-जुलाई
- सितम्बर-अक्टूबर
- फरवरी-मार्च

- एक गड्ढे में 30 सेंटीमीटर दूरी पर 2 पौधे
- फूल आने पर 10% नर पौधों को रखना चाहिए

खाद एवं उर्वरक

- 250 ग्राम नत्रजन प्रति पौधा प्रति वर्ष
- 150 ग्राम फास्फोरस प्रति पौधा प्रति वर्ष
- 250 ग्राम पोटाश प्रति पौधा प्रति वर्ष

सिचाई

- गर्मियों में सिचाई 6-7 दिन के अन्तराल पर
- सर्दियों में सिचाई 10-12 दिन के अन्तराल पर
- वर्षा ऋतु में सिचाई पानी न बरसने पर आवश्यकतानुसार

खरपतवार नियंत्रण

- 2-3 सिचाई के बाद थालो क़ी हल्की निराई गुड़ाई करनी चाहिए

रोग नियंत्रण

- मुजैक
- लीफ कर्ल
- डिस्टोसर्न
- रिंगस्पॉट
- जड़ एवं तना सडन
- एन्थ्रेक्नोज
- कली तथा पुष्प वृंत का सड़न रोग

नियंत्रण

- वोर्डोमिक्सचर 5:5:20 के अनुपात का पेड़ो पर लेप करना चाहिए
- अन्य रोग के लिए व्लाईटाक्स 3 ग्राम या डाईथेन एम्-45, 2 ग्राम प्रति लीटर अथवा मैन्कोजेब 0.2-0.25% अथवा कापर आक्सीक्लोराइट 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करना चाहिए

कीट नियंत्रण

- माहू
- रेड स्पाईडर माईट
- निमेटोड

- नियंत्रण के लिए डाईमेथोएट 30 ई.सी.1.5 मिलीलीटर या फास्फोमिडान 0.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव

फलो क़ी तुड़ाई एवं उपज

- फल पकने से पहले ही तोडना चाहिए
- जब फलो का रंग परिवर्तित होने लगे तब समझ लेना चाहिए की फल पक गए है
- पपीता की पैदावार प्रति पेड़ एक मौसम में औसत उपज में फल 35-40 किग्रा
- प्रति हेक्टर उपज 15-20 टन